

Janm Diwas Samaroh

Date : 21st March 1979
Place : Mumbai
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 08
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

मेरा मन उमड़ आता है। आज तक लगातार बम्बई में ये जन्मदिवस मनाया गया। बम्बई में बहुत मेहनत करनी पड़ी है। सबसे ज्यादा बम्बई पर ही मेहनत की लोग कहते भी हैं कि, 'माँ आखिर बम्बई में आपका इतना क्या काम है?' पहले तो यहाँ पर रहना ही हो गया था। लेकिन बाद में भी बम्बई में काम बहुत हो सकता है ऐसा मुझे लगता है। हालांकि बम्बई पे कुछ छाया सी पड़ी हुई है। अभी दिल्ली में थोड़ा सा भी काम बहुत बढ़ जाता है। देहातों में भी बहुत काम हुआ है, हजारों लोग पार हो गये हैं। इसमें कोई शक नहीं। लंडन जैसे शहर में भी बहुत काम हुआ। लेकिन बम्बई के लोगों पे कुछ काली छाया सी पड़ी हुई है। मेरे खयाल से पैसे के चक्कर बहुत ज्यादा बम्बई के लोगों में हैं। बड़ी आश्चर्य की बात है कि बम्बई में सालों लगातार मेहनत की है हमने और सबसे कम सहजयोगी बम्बई शहर में हैं। इसका कोई कारण समझ में नहीं आता है। बहुत बार मैं सोचती हूँ और जब लोग मुझ से पूछते हैं कि, 'माँ, आप बम्बई पे इतना क्यों अपना समय देती हैं? आखिर बम्बई में कौनसी बात है?' हालांकि शहरों से मैं बहुत घबराती हूँ। शहरों के लिए तो ठग लोग काफ़ी तैयार हो गये हैं क्योंकि आप की जेब में पैसे हैं और ठग आपको ठगना चाहते हैं। और आप लोगों के पास पैसा है, आप ठगों के पास ज्यादा जाते हैं। जो लोग सर्कस बनाते हैं उनके पीछे में आप दौड़ते हैं। हजारों लोग ऐसे लोगों के लेक्चरों में दौड़ते हैं। असलियत को नहीं खोजते हैं। वो पैसे की जो अहंकार देने की शक्ति है उसको अजमाते हैं।

लेकिन तो भी बम्बई से मेरा बड़ा प्रेम है। उसकी वजह है बहुत बड़ी। शायद आप लोग नहीं जानते कि महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तीनों का उद्भव इसी बम्बई शहर में हुआ। इस धरती माँ ने न जाने क्या सोच कर के आपकी इस नगरी में ये पुण्य कार्य किया और ऐसी शक्तिशाली चीज़ जो कहीं भी, कहीं भी दुनिया में नहीं है। तीनों शक्तियों का यहाँ पर उद्घाटन किया। लेकिन लोग उस महालक्ष्मी के मंदिर में जा कर के भी सारे ही गलत काम करते हैं और उसके पास की जो महालक्ष्मी थी... उसमें अगर आप जा के देखे तो वहीं पे भीड़ लगी रहती है। न जाने लोग क्या खोज रहे हैं इस बम्बई शहर में। मैं बहुत बार सोचती रहती हूँ कि इन लोगों के दिमाग कब खुलेंगे? कब ये लोग सोचेंगे? कब इनके दिमाग में ये बात आयेगी कि सब से बड़ी चीज़ आत्मा को पाना है। बगैर आत्मा को पाये आप परमात्मा को नहीं जान सकते। सब कुछ बाकी जो भी आप कर रहे हैं, सब कुछ, अविद्या है। सब कुछ व्यर्थ है। आप जानते हैं कि परमात्मा का साम्राज्य अबाधित चल रहा है सारे संसार में। उसने सारी सृष्टि बनायी है और आपको भी इसीलिये बनाया है कि उस परमात्मा को जाने जो आप का कर्ता, स्रष्टा और आपका पालनहार है। उस की शक्ति को आप समझें। न जानें क्यों इन्सान इस तरह से भरमा गया है, इस तरह से गलत रास्ते पर चल पड़ा है, इस तरह से अपने जीवन को इतना क्षुद्र बना दिया है। हालांकि परमात्मा ने भी बहुत मेहनत की है इस मानव को बनाने के लिये। आप जानते हैं कि एक अमिबा से आपको इन्सान बनाया गया है। एक आप अपनी आँख को टटोले तो आप को पता होगा कि ये आँख कितनी महत्वपूर्ण है। इस आँख को कितनी खूबसूरती से उस परमात्मा ने घड़ाया है। इस सारे शरीर को उसने कितनी सुंदरता से बनाया है। और इस शरीर के अन्दर वो पूरा यंत्र

बना के रखा है जिससे आपको ये वरदान मिलने वाला है और ये चाबी आपके अन्दर खुलने वाली है। लेकिन इस बम्बई शहर में लोग सोये हैं। कोई निद्रावस्था में लोग रहते हैं। पता नहीं की किस चीज़ की मस्ती चढ़ गयी, किस तरह का नशा चढ़ा हुआ है।

मैं बार-बार आप लोगों को कहती हूँ, कि आप जागिये। जागने का समय आ गया है। वास्तव में सहजयोग के मामले में आप जानते हैं, कोई ये नई चीज़ नहीं है। कबीर ने सहजयोग कहा हुआ है। नानक ने कहा हुआ है। राम ने जो किया वो सहजयोग ही था। जो नंगे पैर सारे भारतवर्ष में घूमे। आपके महाराष्ट्र में जो घूमे हैं। वो इसीलिये घूमे थे कि इस जमीन की, इस धरती, इस भारतमाता के कण-कण में वो चैतन्य भरें। उनके पैर से चैतन्य बहता था। इस चैतन्य लहरियों को भरने के लिए उन्होंने यहाँ पर पदयात्रायें की। धरती माँ ने भी यहाँ पर अष्टविनायक की उत्पत्ति की हुई है। वो भी इसलिये की चैतन्य की लहरियाँ बहती रहेंगी और लोग उसको जानते हैं। उसके बाद कृष्ण ने जो भी किया वो भी सहजयोग ही था। पूरा सहजयोग था। राधाजी स्वयं साक्षात् शक्ति थी। रा...धा, रा माने शक्ति, धा माने धारण करने वाली। वो शक्ति थी। जब वो अपने पाँव जमना में डालते थे तो वहाँ चैतन्य बहता था। उस पानी को जब वो अपने सर पर रखती थी तो भी चैतन्य बहता था। उस पानी को वो कंकड़ मार के जमीन पर गिराते थे तब भी चैतन्य वहाँ डालती थी। जब गोपियाँ अपने सर पे जमना का पानी रख के चलती थी तो उस पे भी कंकड़ मार के उनके पीठ पर वो चैतन्य का पानी गिराते थे। जिससे उनकी जागृति हो जाए। फिर वो रास खेलते थे। रा...स, रा माने शक्ति स माने सह। शक्ति के सहित जो वो सब को खड़ा कर देना चाहते थे, वो भी राधाजी के बदन से बहने वाली चैतन्य शक्ति सब में दौड़ाते थे। हर एक चीज़ में उन्होंने यही प्रयत्न किया, कि मनुष्य के अन्दर की कुण्डलिनी जागृत हो जाए। इस तरह से जैसे खेल-कूद में हो जाए। क्योंकि वे लीलाप्रिय थे।

लेकिन मानव आज हजार साल से यही करता आ रहा है। मेरे जन्म से ही एक बात में जरूर जानती थी, इसलिये मैं अपने पिता से भी बहुत सलाह करती थी, वो भी बहुत पहुँचे हुये थे। उन्होंने भी मुझ से यही कहा कि जब तक ये चीज़ सर्वसामान्य से नहीं होगी, जब तक ये अनुभूति, आत्मा की ये अनुभूति जब तक सर्वसामान्य की नहीं होगी, तब तक न तो परमात्मा का कोई अर्थ रहेगा, न ही उनके सृजन का, उनके क्रिएशन का कोई अर्थ रहेगा। जरूरी है कि लोग आत्मा को जानें क्योंकि आत्मा के बगैर आप परमात्मा को जान नहीं सकते। जिस प्रकार आँख के बगैर आप कुछ देख नहीं सकते, उसी प्रकार जब तक आपका आत्मा जागृत नहीं होता तब तक आप परमात्मा को जान नहीं सकते। परमात्मा के नाम पर हजारों आप दुकानें खोल दे और परमात्मा के नाम पर दुनियाभर के ढ़कोसले और ढोंग को खड़ा कर दे और जिसको की आप माने, उस से कुछ भी होने वाला नहीं। आप के हृदय के अन्दर ही आत्मा का स्थान है। जो साक्षी आप ही के अन्दर बसा हुआ है, उस को जानना ही होगा। ये बहुत जरूरी बात है। आप समझते नहीं है। कितनी जरूरी बात है। वो समय आ गया है।

आपने अभी विदेशी सहजयोगियों से सुना है, कि उनका देश, उनके देशों में वो सोचते हैं कि(अस्पष्ट) शराब पी कर रास्ते में लोट गये हैं। इतनी बुरी हालत है कि कौन माँ है, कौन बहन है, ये भी कोई पहचान नहीं पाता। एकदम टूट गये हैं लोग। उनको रात रात भर नींद नहीं आती। स्वीडन जैसे देश में दस में से नौ आदमी आत्महत्या की सोचते हैं। यहाँ पे सब से ज्यादा आत्महत्या संसार में होती हैं। जो सबसे ज्यादा सुबत्ता वाला देश है। हम लोग

आज पैसों के पीछे में और दुनिया भर की गैर वस्तुओं की पीछे में सारी शक्तियाँ लगा रहे हैं। अपना स्वयं ही मूल्य खतम कर रहे हैं। हम किस चीज़ के लिये बने हैं, कैसे बने हैं? परमात्मा ने हमें कितनी मेहनत से बनाया। हमारा क्या महत्व है? हम क्या विशेष चीज़ हैं। हमारी लिये हर तरह से हर पाँचों तत्वों ने भी मेहनत की है। सब ने मेहनत कर के आपको बनाया, आपको घड़ाया। आपके अन्दर इसका पूरा यंत्र बनाया हुआ है। आपके अन्दर कुण्डलिनी बनायी है। उसकी जागृति बनायी हुई है। लेकिन सहजयोग धीरे-धीरे पनपता है। एक ये जिवंत क्रिया, दूसरी सच्ची चीज़ है। झूठी चीज़ आप ऐसे ही बना दीजिये, प्लैस्टिक से आप हज़ारों फूल बना सकते हैं लेकिन असली फूल बड़ी मुश्किल से खिलते हैं। लेकिन जब बहार आती है तो हज़ारों फूल खिल सकते हैं। लेकिन इस बम्बई में 'बहार' किसी को खबर ही नहीं शायद। सब लोग सो रहे हैं। अपनी नाँद में ही पड़े हुये हैं। किसी को होश ही नहीं कि बहार आ भी गयी और न जानें कितने ही खिल गये और अभी हम इसी मिट्टी में पड़े हुये मर रहे हैं।

आज बड़ा शुभदिन है। आज के दिन ऐसा नहीं की माँ बच्चों को डाँटें। सच आज ऐसा दिन नहीं है। लेकिन आज सालों से यहाँ पर, १९७० से ले कर आज तक हर बार मैंने यही जिद की बम्बई में ही ये दिन मनाया जायें। और हर बार मैं बहुत आप लोगों के तारीफ़ के पूल बाँधती रही। लेकिन देखती हूँ कि सहजयोग यहाँ पनप नहीं पाया है। यहाँ के गन्दे लोगों के दिमाग से चलेंगे। यहाँ पर आज एक गन्दा आदमी आ कर के गन्दी बातें आपको सुनायें तो हज़ारों आदमी वहाँ दौड़ कर के नंगे नाचेंगे। आप लोग नाचिये। लेकिन आप लोगों को सच्चाई चाहिये। और मैं आज बता दे रही हूँ। इस बात को आप सुन लें। इस प्रकार एक दिन मैंने बताया था, आंध्र में, तो मुझ से लोग नाराज हो गये थे। जब मैंने आंध्र में जा के बताया कि जागिये आप लोग। क्या हैं यहाँ पर? सब जगह तंबाकू लगाया है। तंबाकू के खेत के खेत। और कहने लगे, 'हम लोग नहीं खाते। हम लोग सिर्फ़ एक्सपोर्ट करते हैं।' जितने रईस लोग हैं वो तंबाकू लगा रहे हैं और गरीब लोग जो हैं वो तांत्रिक विद्या पर। मैंने कहा, 'खबरदार, बहुत हो गया। अब ये समुद्र आ के खा जायेगा आपको।' और आप देखिये, मैंने किस डेट पर कहा हुआ है और वही हो गया। न जाने क्यों मेरे अन्दर इस कदर घबराहट हुई की ये लोग कर क्या रहे हैं? क्या भूल गये कि परमात्मा हर एक चीज़ को देखता है। हर कोई नापता है। हर सिटी का अपना अपना पुण्य है। हर जगह का अपना अपना पुण्य है। इसकी भी कोई हद होती है। उस हद से गुज़र गये हैं लोग।(अस्पष्ट) और उसको सहना पड़ेगा।

पिछले साल मैंने ऐसे ही वहाँ के पंडों का हाल सुना। पंडों ने बहुत सताया और गंगा-जमना पर बैठ कर के इस तरह से वो धन को बेच रहे हैं। तभी मैंने ऐसे चीख चीख कर के कहा था कि इन पंडों से बच कर रहिये। अब देखा कि अपने खौंचे उठा के सब भागे जब गंगा जी और जमना जी(अस्पष्ट)। ये शुरुआत है। लेकिन आगे का भी सोचना होगा, मैं बता रही हूँ आपको। आगे का भी सोचना होगा। इसके आगे जो कल्कि अवतरण आने वाला है। वो आपके सामने आ कर ऐसे बतायेगा नहीं। आप से बिनती नहीं करने वाला। आप पे मेहनत नहीं करने वाला। आप को रियलाइज़ेशन नहीं देने वाला। आपकी कॅन्सर की बिमारियाँ ठीक नहीं करने वाला। वो तो हाथ में तलवार ले के खटा खट आखरी चीज़ है। उस वख्त सर्वनाश! यही उनका कार्य है।

सहजयोग में बहुत अच्छा है। इसमें इंटीग्रेशन है, सुख है, आनन्द है, शारीरिक सुख है, मानसिक सुख है और परमात्मा का आशीर्वाद है। बहुत सुन्दर है। लेकिन कल्कि युग में ये नहीं होगा। कल्कि के अवतरण के बारे में आप

सबने सुना है और वो होने वाला है। उससे पहले थोड़ी सी मियाद है। थोड़ा सा समय है। उस में मेहरबानी की अपने आत्मा की आँखें खोले। आपके अन्दर आत्मा हमेशा वास करता रहा और आपकी कुण्डलिनी भी आपके साथ हमेशा रहती हैं। लेकिन आज तक कुण्डलिनी न जाने क्या क्या लोगों ने बना कर रखा है, जो की आपकी स्वयं माँ हैं। और आप भी उस चीज़ को हर समय किस तरह से सुनते रहे हैं। मेरी यही समझ में नहीं आता है, कि कुण्डलिनी जो की आपकी स्वयं की माँ हैं, उस पर गाली-गलोच लगाने वालों की बातें आप बड़ी प्रेम से सुनते रहे और उनके लिये रुपया दे दे कर के और वहाँ आपने घण्टों लगा दिये उनके टेप लगा लगा कर के। भक्ति से आपने उनकी गुरु विद्या सीख ली। जो आपकी माँ पे गाली लगाते हैं, ऐसे लोगों को आपने माना। सब से पहले आप जान लीजिये कि परमात्मा ने जब ये सृष्टि बनायी थी, तो पहली चीज़ उसने गणेश जी को बिठाया था, जो पवित्रता के द्योतक हैं। पहली चीज़ पवित्रता संसार में बनायी थी। और जिस इन्सान में पवित्रता नहीं होगी उसको परमात्मा की बात करने का कोई भी अधिकार नहीं। क्योंकि सहजयोग में आने के बाद आपकी पवित्रता बन जाती है। बहुतों की तो अपने आप ही बन जाती है। ये तो पूर्वसंपदा की बात है। पर बहुत से लोगों की धीरे-धीरे बनती है।

याने आप सोचें कि जहाँ से भी आप आये हैं, सोलह हजार आदमियों ने शराब पीना छोड़ दिया है। इसलिये लोग सहजयोग में नहीं आते कि माताजी फिर कहेंगी कि आप शराब मत पियो। मैं नहीं कहती, अपने आप छूट जाती है। क्योंकि जब मन की ही मदिरा आप पीने लग गये, जब आप को अपना ही आनन्द आने लग गया, जब मन से ही अमृत झरने लग गया, तो आप शराब क्यों पीते? मुझे कहने की जरूरत क्या है? अपने आप, ये जो आज आपके सामने खड़े हुये हैं ऐसे हमारे यहाँ तीन सौ पक्के लोग हैं जिन्होंने पूरी तरह से सब चीज़ अपने आप छोड़ दी और ये लोग तो ड्रग्स तक लेते थे। मैंने जा कर उनसे नहीं कहा था कि, 'आप ड्रग्स छोड़िये।' आपके अन्दर की शक्ति है, आपके अन्दर की कुण्डलिनी है आप उसे खोज लीजिये। बस, इतना ही मुझे कहने का है। लेकिन ये बात कहने पर नाराज़ होने की भी कौन सी बात है। मैं कहती थी कि तांत्रिक लोगों को भी सोचना चाहिये, कि माँ क्या बुरे के लिये कहे। कोई माँ अपने बच्चे से कहेगी, कि जो गलत काम है वो सही है? पर सहजयोग में आने के पहले मैं कुछ भी नहीं कहती। जैसे भी आप हैं, जो भी आपकी बीमारी है, जैसे भी आपकी हालत है हमारे सर आँखों पर! आप आइये! और उसके बाद आप उसे पाइये। सहजयोग आपको आमूलाग्र, उपर से नीचे तक बदल देता है। क्योंकि ये जीवंत क्रिया है।

जैसे एक पेड़ है। वो जीवंत है। उसके अन्दर कोई खराबी हो जाये, तो आप उसके अन्दर ऐसा कोई ड्रग डाल सकते हैं जिसके कारण पूरा उपर से नीचे वो ठीक हो सकता है। लेकिन जो मरी हुई चीज़ है। समझ लीजिये बिल्डिंग है इसके तहखाने में कोई खराबी हो जाये या इसके दीवारों में खराबी हो जाये, उसे हम ठीक नहीं कर सकते। आप जीवंत है। आपके अन्दर ये जीवंत क्रिया घटित होती है। उसके लिये परमात्मा ने आपको धीरे-धीरे एक-एक चक्र बना के इतना सुन्दर बनाया। लेकिन क्या आपके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहते? क्या आपकी शक्ति को बिल्कुल ही नहीं पाना चाहते? आपके अन्दर बने हुये ये चक्र कितने सुन्दर हैं। कितनी मेहनत से बने हैं और वो लालायित हैं। आपकी कुण्डलिनी जो है बैठी हुई है। हजारों वर्षों से आपके साथ जी रही है और चाह रही है कि वो क्षण आ जाये जब आप परमात्मा को पा ले। लेकिन उसके लिये कितना मुझे आप से कहना होगा। कितना आपका आर्जव करना होगा। आपको भी तो थोड़ा सा सत्य को मानना होगा। सत्य आपके मानने

वाला नहीं। सत्य आपसे कोई वोट नहीं माँग रहा है। सत्य आपसे रुपया-पैसा नहीं माँग रहा है। आप खरीद नहीं सकते सत्य को। यही सत्य का दोष है। अगर आप सत्य को खरीद सकते और आपका हकदार अगर उससे पूरित होता तो आप लगे रहते। जैसे और गुरुओं के पीछे आप भाग रहे हैं और फालतू अपना समय बरबाद कर रहे हैं और अपना रुपया बरबाद कर रहे हैं। आप ही अपने गुरु हैं। आपको क्या जरूरत है किसी के पीछे भागने की! आप इसे पाईये। इसे जानिये। थोड़ी सी तो भी अपनी कद्र करें। अपनी इज्जत करें। अपने को समझें। ऐसी छोटी-छोटी चीजें, बेकार की चीजों में इस महान, मूल्यवान मनुष्य धारणा को न डालें।

अभी दिल्ली के प्रोग्राम में न जाने कितने लोग पार हो गये। बहुत लोग आये। हर तरह के। मुझे आश्चर्य हुआ कि दिल्ली में, एक नानक साहब की बात मैं जरूर कहूँगी। इनकी कृपा बड़ी रही हैं, इसलिये दिल्ली के लोगों में इसका जागरण बहुत है। पर इस महाराष्ट्र में ही कितना कार्य हो रहा है। ये संतों की भूमी है। यहाँ संतों ने अपना रक्त सिंचन किया है। इस महाराष्ट्र में बहुत कार्य हो सकता है। लेकिन इस मुम्बानगरी, जो कि इसकी राजधानी मानी जाती है, न जाने क्यों इतनी संतों से रहित, इतनी सत्य से रहित, नास्तिकों से भरी हुई, इतनी पाप नगरी क्यों हो गयी? आप पे बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। आप पे बड़ी भारी जिम्मेदारी है। कल परमात्मा आप से पूछेगा कि, 'बेटे आपने क्या किया? उस पाप में भाग लिया तुमने? उस पाप में तुम समागम कर गये।' कि लोग आते, 'माँ हमारे बच्चे का ऐसा क्यों हैं? हमारे बच्चे को ये तकलीफ क्यों हो रही है? हमारे बेटे को ये तकलीफ क्यों हो गयी? हमारा ऐसा क्यों हो गया? आप क्या करते रहे? आप कहाँ हैं?' जिन देशों से आज ये लोग आके बातें कर रहे हैं वहाँ जाने पर आपकी भी आँखें खुल जायेगी। आप उसी रास्ते पर चले जा रहे हैं। लेकिन वो किस गड्ढे में जाकर गिरे हैं वो आप देख नहीं सकते। क्योंकि आपके सामने सिर्फ उनका चलता हुआ रास्ता दिखायी दे रहा है। लेकिन वो गड्ढा नहीं दिखायी दे रहा है। जहाँ वो अपने सर दूँढ रहे हैं और कोशिश कर रहे हैं किसी तरह उसमें से निकल आयें। और जब वो कोशिश उनकी नहीं बन पाती तो आत्महत्या करते हैं। आत्महत्या कर के भी कौन बच सकता है? कोई मरता ही नहीं। फिर से, फिर से वही जन्म आयेगा और वही द्विधा, वही आफ़त, वही आतंक।

कैंसर की बीमारी एक बड़ा भारी, एक तरह से, आप लोगों के सामने एक शैतान खड़ा हुआ है। उसे देख कर तो आप समझ लें कि सहजयोग के सिवाय कैंसर ठीक नहीं हो सकता। आप कितनी भी कोशिश कर ले, आपका कैंसर सहजयोग के सिवाय ठीक हो नहीं सकता। अभी डॉ. कजोरिया आपके सामने थे, उन्होंने लंडन में भी कैंसर ठीक किया है। आप डॉक्टर लोगों के पास जाईये। यहाँ पर हमारे डॉक्टर भी बहुत से शिष्य हैं। वो भी कैंसर ठीक करते हैं। लेकिन जब डॉक्टरों के पास जाईये तो कहेंगे कि, 'हमारे पास लिस्ट दीजिये आप, कितने लोगों का ठीक किया है।' ये प्यार का खेल है। क्या आप अपने घर में आये हुये मेहमानों की लिस्ट देते हैं किसी को? क्या आप ये बताते हैं कि उसको कितने निवाले खाने के दिये? ये जो पैसे से काम करने वाले डॉक्टर है ये क्या समझ सकते हैं प्यार को! ये क्या माँ को समझ सकते हैं। इनके बस का नहीं है ये समझना। ये लोग तो हमसे ऐसे उलटे-सीधे सवाल पूछते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। मुझे तो ये भी नहीं पता कितनों को ठीक किया, कितनों को नहीं किया। गंगा बह रही है, जो ठीक हो गया वो ठीक हो गया। नहीं ठीक हुआ, नहीं हुआ। उसमें क्या कोई हिसाब लगाता है कि कितनों को ठीक किया? कितनों को आशीर्वाद दिया? कितनों को पानी पिलाया? कितनों ने घड़े भरे? प्यार की महिमा आत्मा के प्रकाश से कभी नहीं खुलती। आत्मा का प्रकाश पहले खुलने दीजिये। आत्मा की

रोशनी में आप देख सकते हैं कि प्यार चीज़ दूसरी ही है। आज तक आपने जाना ही नहीं प्यार क्या चीज़ है। प्यार की शक्ति कितनी प्रचंड है। कितनी महान शक्ति है। और इस शक्ति से बढ़ के दूसरी कोई सूक्ष्म शक्ति हो ही नहीं सकती। आप यहाँ बैठे-बैठे किसी भी आदमी को पार करा सकते हैं। यहाँ बैठे-बैठे किसी भी आदमी का भला कर सकते हैं और कल्याण कर सकते हैं। इसकी शक्ति कितनी सूक्ष्म है और कितनी गतिमान है, आप समझ भी नहीं सकते। आपका सारा साइन्स वगैरा इसके पास भी नहीं आता। पर आप इसके अन्दर तो आईये। इसको देखिये तो किस गरूर में आप बैठे हुये हैं। ये गरूर से भी अन्धापन बहुत ज़्यादा है। बहुत ज़्यादा अन्धापन है। कभी-कभी मुझे बड़ा दुःख होता है कि कब इसके बारे में लोग जागृत होंगे और इसे पायेंगे ?

कल मैं आपको ये बताऊँगी कि आप क्या है ? आप क्या चीज़ है ? आपके अन्दर कौनसे चक्र हैं ? और कैसे कैसे वो गतिमान होते हैं ? और किस तरह से ये सुरति, ये कुण्डलिनी, आपकी माँ, किस तरह से आपको बढ़िया तरीके से पार कराती हैं। कितनी कलात्मक हैं, कितनी सुन्दर हैं, कितनी प्रेममय हैं, इसको समझ लेना आपका परम कर्तव्य है। ये आपके साथ जन्मजन्मांतर रहती है और इसको पा लेना भी आपका सबसे बड़ा यही तो एक ध्येय है। आप किसलिये पैदा हुये हैं ? किसलिये मनुष्य बने ? किसलिये अमिबा से आज तक इन्सान बनाया गया ? समझ लीजिये, ये एक बड़ा भारी सा इन्स्ट्रुमेंट बनाया हमने। और इसको अगर मेन से लगाया नहीं तो इसका क्या अर्थ निकलता है ? इसका कोई अर्थ ही नहीं। व्यर्थ हो गया। और इसको बनाने वाले का भी क्या अर्थ हुआ। परमात्मा का भी कोई अर्थ नहीं होता। लेकिन परमात्मा भी आपके सामने झुकता है। एक तरह से आपको स्वतंत्रता है। आपको स्वतंत्र किये बगैर ये कार्य नहीं हो सकता था। इसलिये आपको स्वतंत्र किया गया। लेकिन स्वतंत्रता का मतलब बेछूटपना तो नहीं हो सकता। कोई अगर एरोप्लेन के इससे कहें कि हम स्वतंत्र हैं। हम जहाँ चाहे जैसे चिपक जायें और जब चाहें निकल जायें, तो वो क्या एरोप्लेन चढ़ सकता है। आप अगर एक संबंध, पूरे एक परमात्मा के अंग-प्रत्यंग हैं, अगर आप उस विशाल-विराट के ही रक्तमाँस पेशियाँ हैं, तो क्या आप अपना अलग अस्तित्व रख सकते हैं ? और कह सकते हैं कि मैं स्वतंत्रता से जन्मा हूँ। जैसे ही आपने ये कह दिया, आप मैलिग्रंट हो गये, आप एक कैन्सर हो गये उस शरीर से। जैसे ही आपने सोच लिया कि 'मुझे जो करना है मैं करूँगा।' उसी जगह आपको जानना चाहिये। एक तो आप जानते नहीं कि सारे परमात्मा, उसके एक-एक अंग-प्रत्यंग बसे हुये हैं, जो भी महान..... जो आपने कहा ऐसे लोग हैं। वो सब आपको देख रहे हैं। जैसे ही आप इस कैन्सरस्थिति में चले जाएंगे, आप नुकसान पहुँचाएंगे अपने को भी, और उस विशाल देह को भी जिस में आत्मा समाया रखा है।

इसका विचार आपको रखना चाहिए। बहुत जरूरी है कि अब समय बहुत कम है। बहुत कम है। आप समझ सकते हैं कि १९७० से ले कर आज तक इस बम्बई शहर में मैंने महिनो काटे। बहुत मेहनत की। जैसे इन्होंने कहा, सबसे ज़्यादा मेहनत मैंने बम्बई में की। बहुत ज़्यादा मेहनत की है। लेकिन बम्बई के लोग बहुत मुश्किल हैं। यहाँ पे यही हो कि 'अति परिचयात् अवज्ञा।' लेकिन ऐसे सोते रहने का अब समय बीत गया। कृपया आप लोग जागें। कल आप अपने साथ और लोगों को ले आईये, जो आपके अड़ोसी-पड़ोसी हैं। और हो सकें तो आज हमारा जो प्रोग्राम इसके बाद होने वाला है कव्वाली का उसमें मैं आपको आत्मसाक्षात्कार देने का प्रयत्न करूँगी।

इस वख्त सब लोग मेरी ओर ऐसे तरह से हाथ कर के बैठें। और आपको धीरे-धीरे हाथ में ठण्डी-ठण्डी हवा

आने लग जाएंगी। आप देखेंगे कि आपके हाथ के अन्दर ये चैतन्य की लहरियाँ ठण्डी-ठण्डी आने लगेंगी। इन ठण्डी-ठण्डी लहरों के बारे में श्री आदि शंकराचार्य ने आपको बहुत विशद रूप से बताया हैं। बायबल में भी बताया हैं, कि होली घोस्ट माने आदिशक्ति के अंग से ये ठण्डी-ठण्डी लहरें निकलती हैं। सब दूर इसका वर्णन है। कोई ये नयी चीज़ नहीं है। लेकिन आज तक ये सर्वसामान्य के लिये घटित नहीं हुआ था और ये चीज़ सर्वसामान्य को मिलनी चाहिये। दो-चार कोई चलती नहीं है। इस वजह से ये कार्य आज इस कलियुग में करने का आवश्यक था। आप लोगों ने आज मुझे इतनी बधाईयाँ दी हैं, इसमें से बहुत से सहजयोगी भी हैं। और सहजयोगी लोगों के लिये मैं इतना जरूर कहूँगी कि बम्बई में क्योंकि इतने ब्रंचेस नहीं होते, ये प्रसार कम होता है, इसलिये जो सहजयोगी बहुत गहरे थे, बहुत गहरे थे सहजयोगी। यहाँ का गहरापन सहजयोगियों का प्रशंसनीय हैं। क्योंकि इसकी बहुत सारी शाखायें नहीं होती हैं। बाकी के सहजयोगी जितने भी हैं बहुत गहरे उतरते चले जा रहे हैं। बाकि इसका प्रसार बाहर कम फैलता है। जो हैं, २००-३००-४०० तक होंगे कहना चाहिये, जो काफ़ी गहरे उतर गये हैं। लेकिन इनका प्रकाश बाहर की ओर नहीं फैला हुआ। इसलिये मुझे आपसे कहना है कि और जो आपके मित्र लोग हो, सब लोग हो, उनको खाना खिलाना, घूमाना, खिलाना इस तरह की बेकार की चीज़ों में उलझाने से अच्छा है कि आप इस पुण्य का लाभ उठायें कि उनको आप ही लोग यहाँ पर ला कर के पार करवायें। यहाँ, आप जानते हैं, यहाँ पैसा-रुपया, कोई चीज़ नहीं चलती। सिर्फ यही है कि आपको पार होना पड़ता है। इसमें कोई वाद-विवाद करने से पार नहीं हो सकता। झगड़ा करने से कोई पार नहीं होता। जो पार है वो पार है, जो नहीं है वो नहीं है। आपको पार होना है तो पार हो लीजिये। एक बार आईये, दो बार आईये, जरूर, आने के साथ पार हो जाता है। पिछली मर्तबा काफ़ी मेहनत की थी हमने, और ध्यान दिया था। लेकिन देखते यही हैं कि इन लोगों में अभी भी काफ़ी निद्रावस्था है। उसको थोड़ा सा जगाना चाहिये।

और उस आशा से ही मैंने आज जरा आप से थोड़े कड़े शब्दों में कहा, कि कृपया जागृत होइये। अगर धीमी आवाज सुनाई नहीं देती, अगर मधुर आवाज सुनाई नहीं देती, मंजुल बात सुनाई नहीं देती, इसलिये थोड़ा सा कड़ा होना पड़ता है और कहना पड़ता है कि, बेटे जागो, बहुत देर हो गयी। सूर्य कब का आकाश पे आ गया। न जाने कब डूब जायेगा। फिर से अंधेरे में, हमेशा के अंधेरे में डूब जाओगे। एक माँ का हृदय हैं और वो भी विकल हो जाता है। कभी कभी बहुत व्यथित हो जाता है। इसे समझना चाहिये। आज आप लोगों से मैं एक ही वादा चाहती हूँ कि अगला जनम दिन मैं यहाँ करूँगी लेकिन आप बहुत बार, बहुत तादाद में सहजयोग को प्राप्त करें।